प्यार प्यार, पीड़ा-पीड़ा

लेखिका - सुंदरी उतमचँदाणी

ट्रास्लेशन - गाइत्री

बोलो कि, तुझे मुझसे प्यार नहीं है। यदि नहीं है तो किस अधिकार से अपने घर बुलाकर जबरदस्ती खानी खिलाती हो? क्यों, अपनी पीड़ा भरी आंखो से मेरी आंखों में झांककर, अपनी वेदना मेरे दिल में उतार देती हो? अपनी हर नई साड़ी की झलक दिखा, मुझसे प्रशंसा चाहती हो? क्या हक है तुझे अपने कई फोटोग्राज़्स, मुझे सौंप कर रात दिन उन्हें देखने के लिए मुझे मजबूर करने का?

अभी भी झूठी जिद में ही डूबी रहना। न लिखना, न बोलना कि, 'तुझे प्यार करती हूं।'

अर्जुन

अर्जुन,

इतने इन्तजार के बाद तुझारा मिलना, इतने कम समय के लिए और चिढ़ पैदा करने वाला होगा, कभी ज़्वाब में भी नहीं सोचा था। जो कुछ घटित हुआ, उसके लिए माफी मांगती हूं।

तुझे तो पता है कि मेरे मौसेरे भाई गुलाब का, मुझ पर स्नेह भी है तो रौब ज़ी। मुझ पर ही क्यों, पूरे घर पर। यदि उसके अहसान न होते तो घर का पता नहीं क्या होता? उसने घर को और मुझे सहारा देकर जो एहसान किया है, वह तुझे नहीं पता...

मुझे क्या पता था कि गुलाब मेरा पीछा करता आएगा और हमारे मधुर मिलन के बीच रोड़ा अटकाएगा। अजीब इन्सान है वह। जाने किस अधिकार से उसने मुझ पर हाथ उठा लिया था? किसी स्त्री को सहारा देना यानि उस पर अधिकार जताना, पता नहीं किस डिक्शनरी में पढ़ा है उसने? और वह भी मेरे जैसी स्त्री पर जो हर बंधन से आजाद रहना चाहती है।

एक हंसी की बात सुनो। जब उसने तुमसे कहा था कि मेनका से मिलने का तुझे कोई हक नहीं है तब खुंखार शेर जैसा लग रहा था। लेकिन जब रात को घर आया तब उसका चेहरा देखते, बिल्कुल हताश सा था। मुझे उस पर दया आ गई। उस बेचारे ने भी मेरे लिये क्या-क्या नहीं किया है। उसने जो खत अपनी जेब से निकाल कर दिया था वह भी तुझें भेज रही हूं।

अपने पत्र में कागज के एक टुकड़े पर उसने जो कुछ लिखने की जिद्द की थी वह तो कब का मिट चुका होगा। अब भी क्या जुबान से कुछ कहना जरूरी है ?

मेनका

मेनका,

तुज्हारे पत्र के साथ गुलाब का पत्र भी मिला। तज्हारा नौकर जिस समय पत्र लेकर आया, माँ मुझे खाना परोस रही थी। वह तुज्हारी तरह ही जबरदस्ती खिला रही थी और मुझे तुम याद आ रही थी। दिल कह रहा था काश कि तुम मेरे मोहपाश से कभी भी आजाद न हो सको।

जानता हूं, गुलाब ने भी कभी ऐसी ही कामना की होगी और शायद...लेकिन अब, जब तुम मेरी हो, मैं उसके लिए कुछ भी सोचना नहीं चाहूंगा। में चरित्र को केवल सैक्स के दायरे में रखकर नहीं देज़ता। चरित्र मेरे लिए दिमाग की उज्जवलता और दिल की प्रबलता का नाम है।

गुलाब का खत पढ़कर पता चला कि उसके व्यवहार से उसकी पत्नी अपना आपा तक भूल चुकी है। क्या वह इतना भी नहीं समझता कि, जिस तरह वह तुज्हारे दिल से मुझे निकाल देना चाहता है ठीक वैसे ही उसके दिल से उसकी पत्नी तुज्हे निकाल देना चाहती है। यदि प्यार, दुसरे के मन की पीड़ा का एहसास न करा सके तो उसे प्यार कहना ही नहीं चाहिए...खैर।

तुज्हारा माली जो पीले फूल लेकर आया था, उसे देखकर बसंत ऋतु में केसर से रंगी साड़ियों में लिपटी हुई गोपियों की याद आ गई। यह होली के दिन भी तो हैं। यही फूल...आज शाम को अंधेरी स्टेशन पर तुज्हारा इन्तजार करेंगे। चले चलेंगे वर्सोवा के सागर तट पर।

अर्जुन

अर्जुन,

यह सब क्या हो गया ? तुफां के बाद जैसे दरिया किनारे बैठी सोच रही हूं तो लग रहा है कि मेरे अन्दर की हठीली नारी मुझसे ही बहस करती कह रही है, 'कामना के वशीभूत, खुद पर से निमन्त्रण खोना गलत है।' लेकिन मैने तो जानबूझ कर तुमसे मिलने पर यह सब कुछ होने दिया था। तुज्हारे अन्दर भी तो बेअन्त प्यास थी उससे अपनी प्यास का मिलन करवाना चाहती थी मैं। और जो कुछ भी हुआ, उसके लिए इस नारी को कोई अफसोस नहीं है। लेकिन मेरे अन्दर की संस्कारों से जकड़ी साधारण सी सामाजिक नारी पूछ रही है, 'यदि तुज्हारे मन में इस बात का कोई अरमान नहीं है तो फिर इस पाप को पुण्य में क्यो नहीं बदल रही हो ? अर्जुन द्वारा दिए गए शादी के प्रस्ताव को बन्धन क्यों मान रही हो ?'

और बेबस हो जाती है, मन के अन्दर की घमण्डी नारी। काश! कभी कॉलेज में तुझे, जोश से बोलता न देखती, काश हमारी गाड़ी खराब न होती और जुहू के उस किनारे से तुझारे साथ एक ही टैक्सी में लौटना न पड़ता। वहां गुलाब मेरी गाड़ी की मरज़मत करवा रहा था और यहां, तुझारी जोशीली बातें, मेरे टूटे फूटे दिल को अपनी और खींच कर साबुत बना रही थी। मैं उस समय टैक्सी में तुझारी बायीं तरफ बैठी थी। पता नहीं क्यों तब शादी की एक रस्म याद गई कि पत्नी हमेशा पति के बायीं और ही बैठती है। बात मजाक सी थी लेकिन वह कल्पना भी मधुर थी इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन छोड़ो भी! मन तो उड़ता ही रहेगा, ऐसी कल्पनाओं की वादियों में। वास्तविक दुनियां में इन कल्पनाओं का क्या महत्व? तुझारी और मेरी राहें, वर्सोवा के सागर किनारे उस मछुआरे की सुनसान झौपड़ी के अलावा कहीं भी नहीं मिल पाई हैं। हमेशा की तरह, करूं न करूं की उलझन में उलझ गई हूं। मेरे विचार से शादी वासना का बन्धन है। यदि ऐसा नहीं होता तो मैं अपने पति का घर क्यों छोड़ आती।

मैं तो साक्षी बनकर सारे जहां को देखना चाहती हूं.....तुम रोजना मेरे पास आकर मुझे इस जहां की रंगीन कहानियां सुनाते रहो। बस भरते रहो एक अजीब रंग को मेरे इस सूने—सूने से जीवन में। एक प्यार का सागर बन जाओ जिसमें सैकड़ों प्रीत की लहरे बहे और भर दें मेरी रग-रग को, बेअन्त प्यार से।

मेनका

प्रणाम, श्रीमती मेनका,

मेरे प्रस्ताव का कितना खूबसूरत जवाब दिया है, तुमने। तुमने एक दिन अपने घर में काम करने वाली बाई की कहानी सुनाई थी कि वह बचपन में अपने ममेरे भाई को बहुत चाहती थी। एक दिन वह उसे दगा देकर गांव की दूसरी लड़की को ब्याह लाया था। तब बाई ने उसे मन से ही निकाल दिया था। जब बाई दूसरी जगह शादी करके गई तब उसका पहला प्रेमी वहां आग लगाने आ गया तब तुझारी बाई ने उसे अपने घर से धक्का देकर निकाल दिया था और पति के घुटने पर सिर रखकर रोते हुए उसे पूरी बात बता दी थी।

मेनका बताओ, क्या तुझारे अन्दर ऐसी मजबूत नारी नही है?

जो कुछ जज्बात के बहाव में हो गया उस पर तुम, दुख करना भी जरूरी नहीं समझती। सृष्टि के जिस नियम को तुम जबरदस्ती रोक रही थी उसी ने तुझारी खड़ी की हुई दीवार ढहा दी। यह सब स्वाभाविक ही था। इसी सच को ही दुनियां शादी के नाम से पुकारती है। और तुम उसे वासना का बन्धन कहती हो।

जिन बातों ने तुझारे जीवन में रंग भरे, उन्ही बातों ने दूसरे इन्सान को प्यार, पीड़ा और हालात से सामना करवा दिया। जब-जब भी रंग तुझारी जिन्दगी में प्रवेश चाहते हैं तब-तब तुम उन्हें दरवाजे से ही लौटा देती हो। ठीक ही तो है, तुझे भी तो किसी अमीर की तरह घर की छत पर चढ़ कर खून पसीने से रोजी-रोटी कमाने वालों को केवल देखते रहने का ही शौंक है। क्योंकि तुझारे विचार से तो साक्षी बनना ही सब कुछ है।

घर की छत पर खड़े होकर जब तुम नीचे से गुजरने वालों को देखती हो तो वह सब तुझे तुच्छ मालूम पड़ते हैं। अबर पल भर के लिए भी इनकी पीड़ा को देखो तो शायद रो पड़ो....और जब तुम आकाश की ओर देखती हो तो तुझे केवल सूरज ही नजर आता है। उस समय तुझारा मन किसी के साथ की चाहना करता है और मेरा साथ तुझे प्यारा लगने लगता है। हालांकि उन नाजुक क्षणों में भी खुद पर नियन्त्रण रखना चाहती हो जबकि एक बार इसमें शिकस्त खा चुकी हो...।

यह कैसा रूप है तुझारा? तुझारा ही क्यों, आजकल बड़े घरों के लड़के लड़कियां ऐसे ही तो होते हैं। मीठे आम की सी मुलायम छुअन के बाद गुठली की तरह सज़्त हो जाते हैं। लेकिन ऐसे तो सृष्टि का नाश ही हो जाएगा, मेनका!

तुम एक पढ़ी लिखी लड़की हो। समाज को कुछ देना तुझारा फर्ज है लेकिन तुझे तो कुछ देना आता ही नहीं है। तुझे तो केवल सूक्ष्म प्रेम की जरूरत है, कमल की पंखुड़ी सा कोमल व बर्फ सा ठण्डा। अपने महल के भीतर रहने वाली खुली हवा से महरूम नारी। सूर्य की किरणों और चांद की चांदनी से वंचित हो तुज़। लकिन फूल यूं ही सूख जाए यह मुझे मंजूर नही। मेरे पास महल नहीं है लेकिन जीवट तो है। जीवट-जिससे मेहनत और सेहत के सुन्दर फूल हर वक्त खिलते हैं।

इतने शानो शौकत में रहकर तुझारे अन्दर की जो जीवन ज्योति बुझ रही थी, अफसोस उसे मैं जीवन नहीं दे पाया। इसे अपनी नाकामयाबी मानता हूं। जो इन्सान खतरे में खड़ा होकर चिल्लाता है, बचाओ—बचाओ और जब उसे कोई हाथ बढ़ाकर बचाने की कोशिश करता है तो कहने लगता है नहीं—नहीं। उसे ज़ला कोई कैसे बचा सकता है?

समाज के बन्धन तो तुमने कच्चे धागे की तरहा तोड़ कर फैंक दिये लेकिन मन की रीत को भी पूरा स्वीकार नहीं कर पाई हो। प्रीत, जो जीवन ज्योति है उसे ही तुम पानी का एक गिलास समझ यहां—वहां से पीकर खुद को तृप्त मान बैठी... लेकिन मेरी आात्मा को यह मंजूर नहीं। मेरी आत्मा हमेशा सच की खोज में ही रहेगी और सच को हासिल कर लेगी। मुझे चाहिए मेरे जैसा एक बेबाक साथी जिसमें झूठ को अस्वीकार करने की हिममत हो। मैं उस बाई को तुमसे बेहतर मानता हूं जो तुझारी तरह झूठ और धोखे से चिपटी हुई नहीं है।

पता नहीं क्या कुछ लिख चुका हूं। तुझे तो कोई सच बताना ही नहीं चाहिए क्योंकि तुझारे कान तो केवल सूक्ष्म प्रेम की व्याज़्या ही सुनना चाहते हैं। सृजन और जीवन जिनमें संघर्ष है, समाप्त हो जाने के बाद भी अमर रहते हैं। लेकिन तुझे तो इन सब की जरूरत ही नहीं है। तुम तो वह नारी बनी रहना चाहती हो जो प्यार-प्यार, पीड़ा-पीड़ा करती अपनी अधूरी तमन्नाओं को समेटे, सूखी टहनी के समान जिन्दगी के वृक्ष से गिर कर एक दिन समाप्त हो जाएगी।

इस अन्तिम पत्र में जो कुछ भी लिखा है वह कड़वा सत्य है। लेकिन इस कड़वाहट में ही जीवन है।